INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वरिष्ठ अध्यापक

RAJASTHAN - 2ND GRADE

PAPER – 1

BHAG – 1

राजस्थान भूगोल, इतिहास, संस्कृति, एवं राजव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/tiy32p

Online Order करें - https://shorturl.at/coEI9

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

राजस्थान का भूगोल		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	स्थिति एवं विस्तार	1
2.	जलवायु	24
3.	जल निकासी (अपवाह तंत्र) नदिया एवं झीले	30
4.	राजस्थान की वनस्पति	47
5.	कृषि	56
6.	पशुधन	65
7.	राजस्थान में डेयरी विकास	72
8.	जनसँख्या वितरण, विकास, साक्षरता और लिंगानुपात	74
9.	जनजातियाँ	79
10.	राजस्थान के प्रमुख उद्योग	82
11.	प्रमुख पर्यटन केंद्र	85
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता	91
2.	8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास	98
3.	अजमेर के चौहान	102
4.	दिल्ली सल्तनत के साथ सम्बन्ध (मेवाड़, रणथम्भौर और जालौर)	103
5.	राजस्थान में मुग़ल शासन	146
6.	राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास	149
7.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	154
8.	प्रजामंडल आन्दोलन	158
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन	160
10.	राजस्थान का एकीकरण	169

	राजस्थान की कला एवं संस्कृति	
1.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	173
2.	राजस्थान के संत	183
3.	वास्तुकला-मंदिर, किले और महल	191
4.	पेंटिंग्स (चित्रकला)	213
5.	मेले और त्योहार	223
6.	वस्त्र एवं आभूषण	243
7.	लोक संगीत और लोक नृत्य	246
8.	भाषा और साहित्य	263
	राजस्थान की राजव्यवस्था	
1.	राज्यपाल	274
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद	279
3.	राज्य सचिवालय और प्रमुख सचिव	287
4.	राजस्थान लोक सेवा आयोग, संगठन और भूमिका	293
5.	राज्य मानवाधिकार आयोग, संगठन और भूमिका	294
6.	राजस्थान में पंचायती राज	296
	उच्च न्यायालय (एक्स्ट्रा टॉपिक)	303

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

स्थिति एवं विस्तार

सामान्य परिचय

राजस्थान का विस्तार- इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए:

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए : –

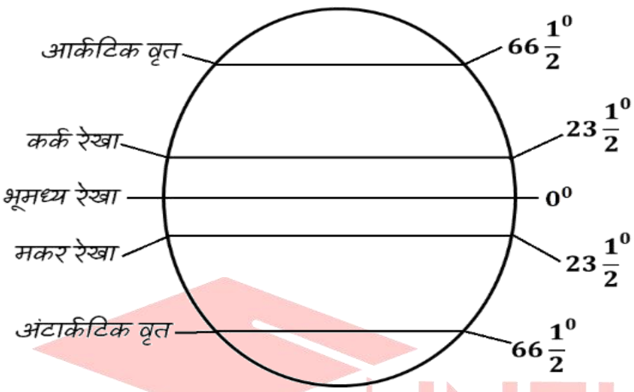

(मानचित्र न. – 1)

नोट- भूमध्य रेखा:- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है । यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है ।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर की ओर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर मकर रेखा है ।

नोट:- पृथ्वी / ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर -दक्षिण" तथा "पूर्व- पश्चिम" में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएँ:- वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएँ:- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट:- उपयुक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक"भारत एवं विश्व का भूगोल पड़े"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

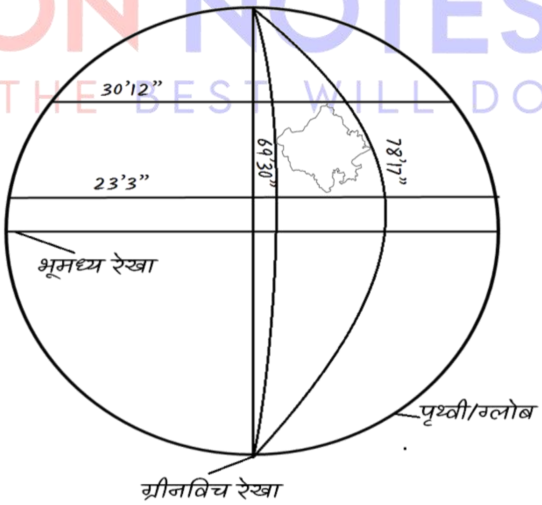

(मानचित्र-A)

नोट:- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7°9" (30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था । लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया। 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थितः-**

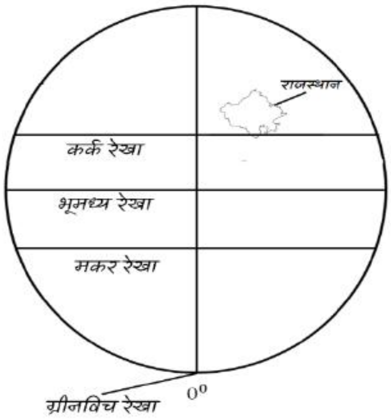

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-
1. गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है । इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है ।

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है ।

राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है ।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है ।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है । जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है ।

राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारणः- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है ।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

(निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए) –

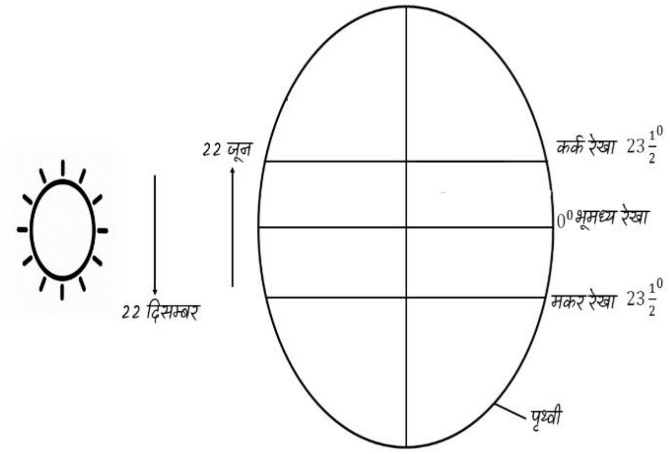

नोटः- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर, दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी, जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है, अर्थात् सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पढ़ती है, इस क्षेत्र को ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहाँ वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बाँसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है, (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बाँसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है, (कारण-रेत) । इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती है, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-जिप्सम) ।

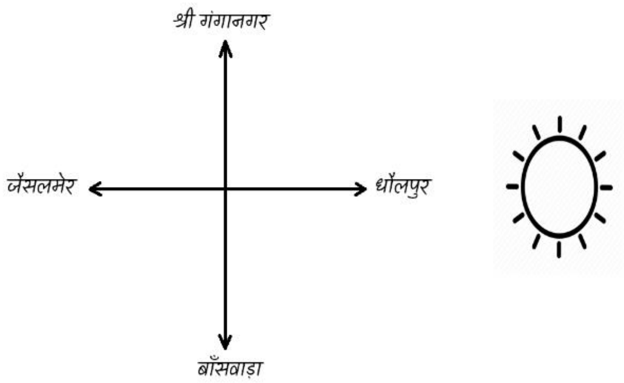

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी

भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

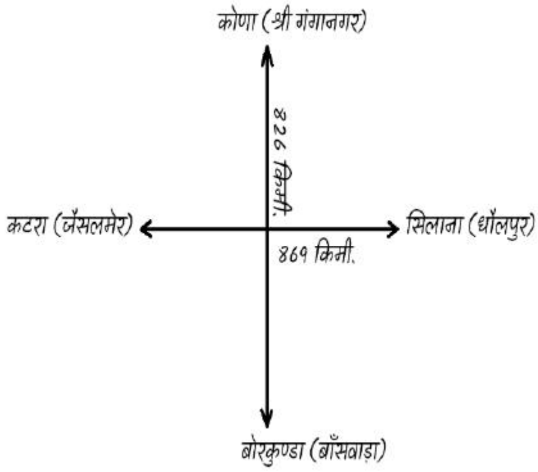

विस्तार:- राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिलें के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिलें के कटरा गांव (सम तहसील) तक है।

आकृति:-

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

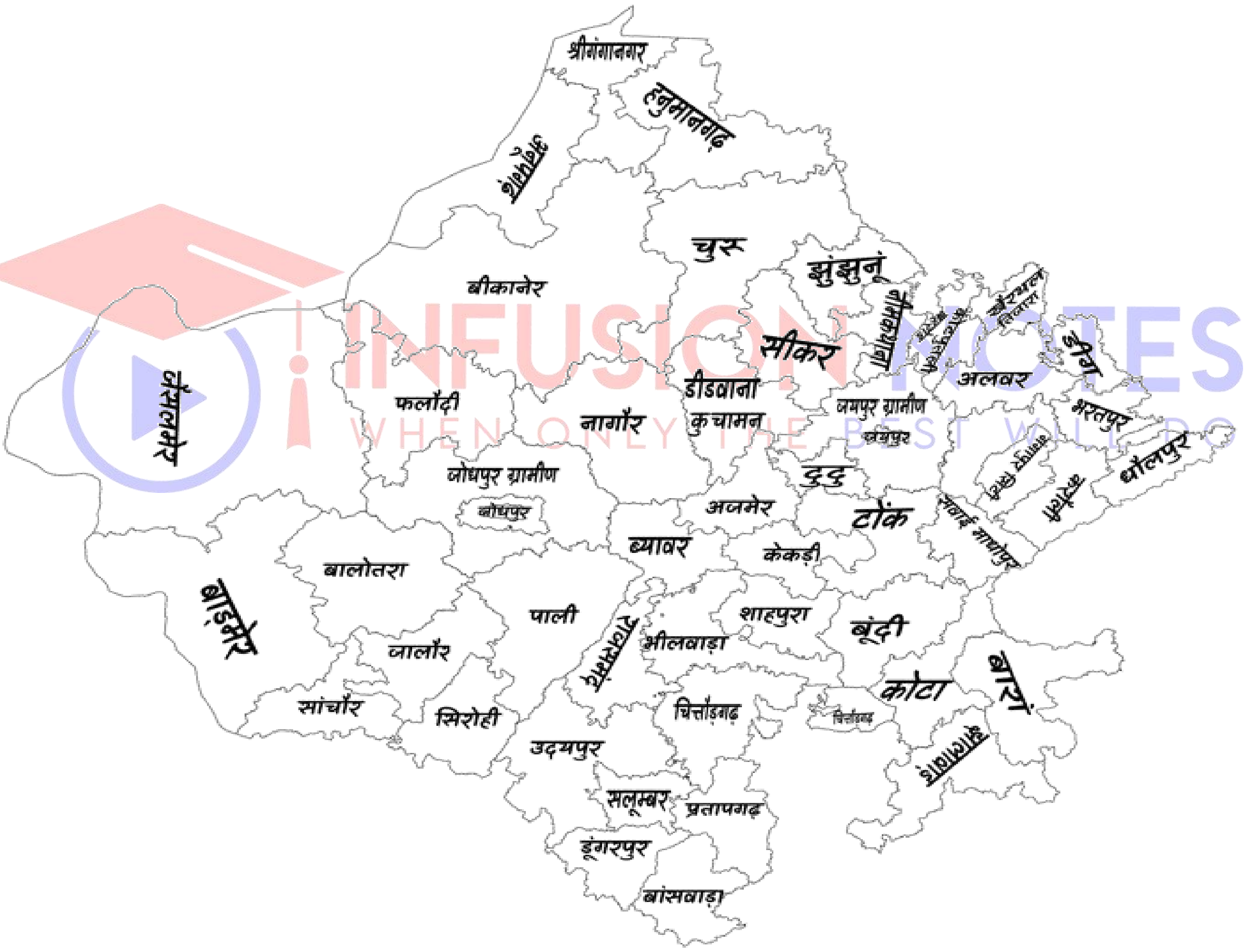

रेडक्लिफ रेखा:-

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3,310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित है।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)
4. जम्मू-कश्मीर
5. लद्दाख (1216 कि.मी.- जम्मू कश्मीर व लद्दाख की संयुक्त)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- राजस्थान (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय:- श्रीनगर

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय:- जयपुर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य:- राजस्थान

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य:- पंजाब

रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के 6 जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर- (210 कि.मी.)
2. बीकानेर- (168 कि.मी.)
3. जैसलमेर- (464 कि.मी.)
4. बाड़मेर- (228 कि.मी.)
5. अनूपगढ़
6. फलौदी

नोट- अनूपगढ़ व फलौदी की सीमा का डाटा सरकार द्वारा आधिकारिक परिसीमन के बाद प्राप्त होगा।

रैडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में गंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव तक विस्तृत है।

रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिलें पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयार खान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खेरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाते हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा-बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो राज्य (प्रांत) राजस्थान से छुते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

[रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखाहैं।]

राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी (30 कि.मी. लगभग) की रेडक्लिफ रेखा से लगती है।

रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय:- अनूपगढ़

रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय:- बीकानेर

रेडक्लिफ पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला:- जैसलमेर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला:- श्रीगंगानगर

राजस्थान के केवल अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले जिलें- 4 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, अनूपगढ़)

राजस्थान के 21 जिलें (जयपुर ग्रामीण, जयपुर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, सीकर, गंगापुरसिटी, सलुम्बर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, बूंदी, दौसा और दूदू) ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय ।

झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

राजस्थान की पाकिस्तान के साथ सीमा

उत्तरप्रदेश (877 किमी.)

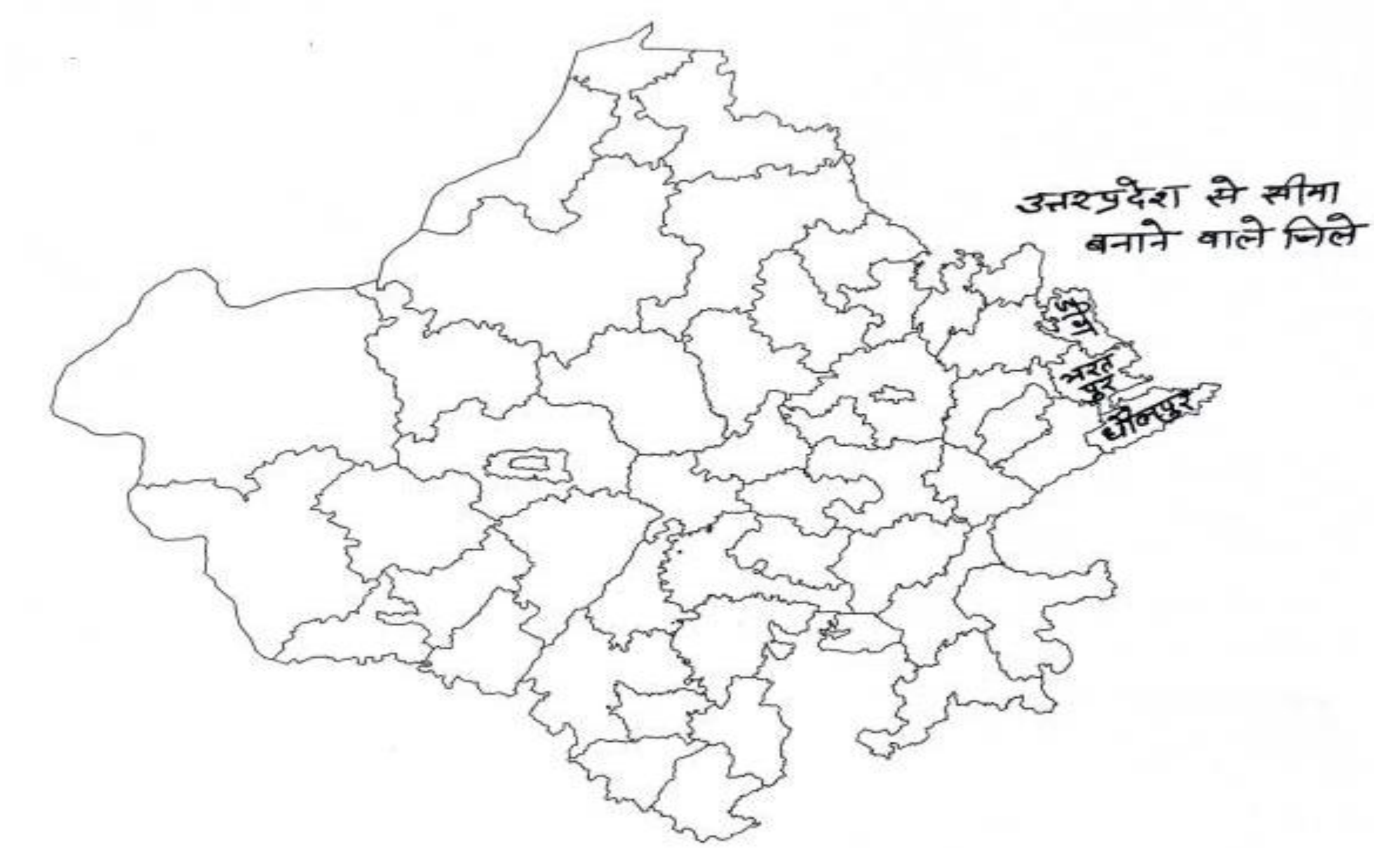

- *राजस्थान के तीन जिलों (डीग, भरतपुर, धौलपुर) की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है।*
- *उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम सीमा डीग की लगती है।*
- *उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला डीग है।*

<u>मध्यप्रदेश (1600 किमी.)</u>

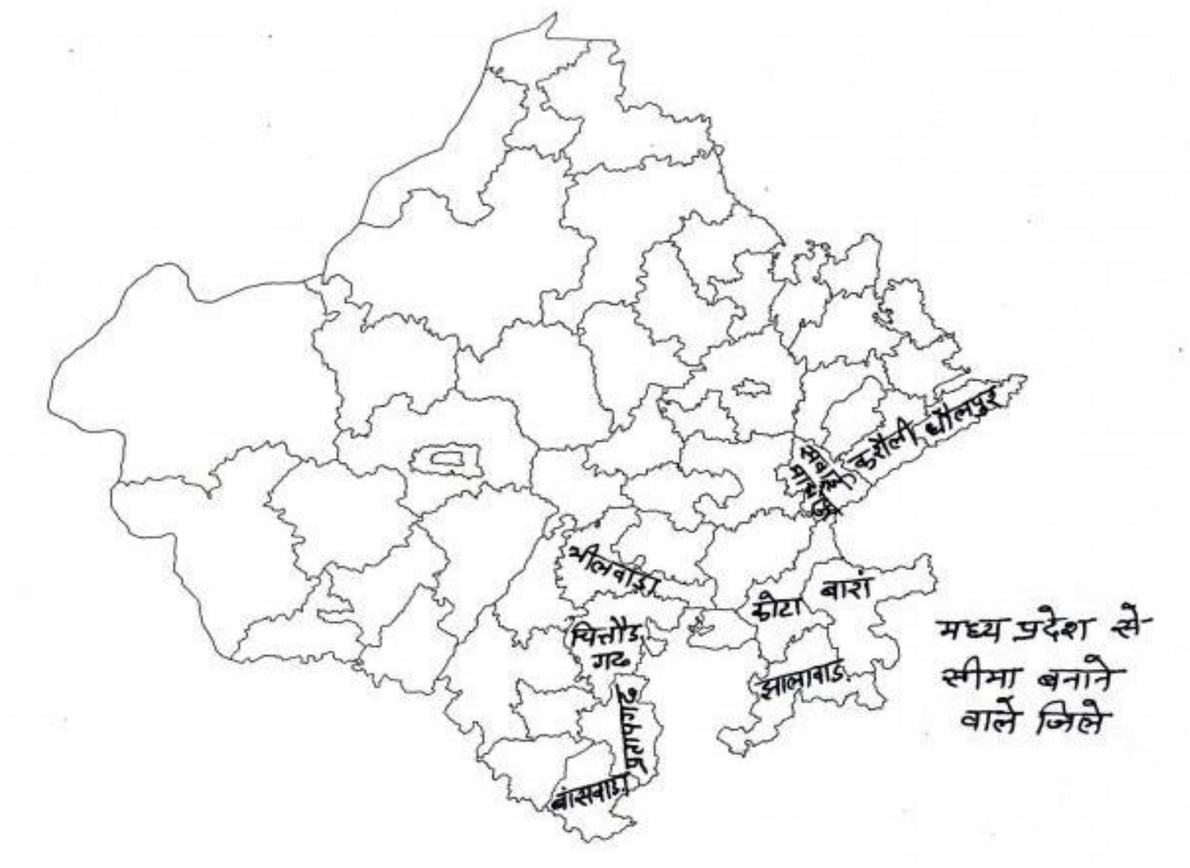

7 अगस्त 2023 को रामलुभाया कमेटी की सिफारिश पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा सीकर, पाली और बांसवाड़ा 3 नये संभाग व 19 नये जिले बनाये गये।
3 नवगठित व 7 पुराने संभागों को मिलाकर राजस्थान में कुल 10 संभाग हो गये हैं।
राजस्थान के 10 संभागो के नाम निम्नलिखित है-

1. अजमेर
2. उदयपुर
3. कोटा
4. जयपुर
5. जोधपुर
6. पाली
7. बांसवाडा
8. बीकानेर
9. भरतपुर
10. सीकर

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था

1. **अजमेर संभाग –** अजमेर संभाग में 7 जिले ब्यावर, शाहपुरा, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, केकड़ी, टोंक, नागौर आते है।
2. **उदयपुर संभाग –** उदयपुर संभाग में 5 जिले आते हैं- उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड़गढ़, सलुम्बर, राजसमन्द।
   ट्रिक – उदय भील का **चित्तौड़** से **सलुम्बर** तक **राज** है।
3. **कोटा संभाग-** कोटा संभाग में 4 जिले (बारां, बूंदी, कोटा, झालावाड़) आते है।
4. **जयपुर संभाग –** जयपुर संभाग में 6 जिले (जयपुर, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा, दूदू) आते है।
5. **जोधपुर संभाग-** जोधपुर संभाग में 6 जिले (जोधपुर / जोधपुर ग्रामीण, बाड़मेर, फलौदी, बालोतरा, जैसलमेर)
6. **पाली संभाग –** पाली संभाग में 4 जिले (पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही) शामिल है।
7. **बांसवाड़ा संभाग –** बांसवाडा संभाग में 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़) शामिल है।
8. **बीकानेर संभाग-** बीकानेर संभाग में 4 जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, बीकानेर) शामिल है।
9. **भरतपुर संभाग –** भरतपुर संभाग में 6 जिले (भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी और डीग) शामिल है।
10. **सीकर संभाग –** सीकर संभाग में 4 जिले (झुंझुनू, सीकर, चुरु और नीमकाथाना) शामिल है।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग- बीकानेर व जोधपुर

- सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग- जोधपुर
- न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग- बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय- बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय-जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग- जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग-बीकानेर

राजस्थान के वे जिले जो अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राज्यीय नहीं बनाते है।

21 जिले- (जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, दौसा, बूंदी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, डीडवाना-कुचामन, सीकर, नागौर, सलुम्बर तथा गंगापुरसिटी)

प्रदेश के जिलों के आधुनिक उपनाम

गंगानगर	फलों की टोकरी, राजस्थान का अन्नागार, बागानों की भूमि
बीकानेर	राती घाटी, ऊन का घर
जैसलमेर	स्वर्ण नगरी, राजस्थान का अंडमान , हवेलियों का शहर ,झरोखों की नगरी , रेगिस्तान का गुलाब ,येलो सिटी ,गलियों का शहर ,पंखों का नगर, म्यूजियम सिटी
जोधपुर	ब्लू सिटी /नीला शहर, सन सिटी सूर्य / नगरी, मरुस्थल का प्रवेश द्वार /सिंहद्वार , राजस्थान की विधि नगरी
बाड़मेर	राजस्थान की थार नगरी ,राजस्थान का खजुराहो
भीलवाड़ा	राजस्थान का मेनचेस्टर ,वस्त्र नगरी ,जू ऑफ़ मिनरल ,टेक्सटाइल सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
राजसमन्द	राजस्थान की थर्मोपोली
नागौर	औजारों की नगरी ,राजस्थान का धातु नगर
सीकर	हाईटेक सिटी
नीमकाथाना	ताम्बा नगरी
जयपुर	पिंक सिटी/ गुलाबी नगरी, पूर्व का पेरिस , हेरिटेज सिटी
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड ,राजस्थान का सिंह द्वार ,राजस्थान का पूर्वी कश्मीर
भरतपुर	राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार, राजस्थान का प्रवेश द्वार
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार ,रेड डायमंड
करौली	डांग की रानी
अजमेर	राजस्थान का हृदय ,अंडे की टोकरी , सांप्रदायिक सौहार्द का शहर ,राजपूताना की कुंजी ,अरावली का अरमान
बूंदी	बावडियों का शहर सिटी) ऑफ़ स्टेपवेल्स ,(वैभव नगरी
बारां	वराह नगरी, मिनी खजुराहो (भंडदेवरा)
झालावाड़	राजस्थान का चेरापूंजी ,विरासत का शहर , घंटियों का शहर(झालरापाटन)
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
प्रतापगढ़	राधा नगरी ,कांठल
कोटा	शिक्षा का तीर्थ स्थल, राजस्थान का नालंदा ,औद्योगिक नगरी, राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर
डूंगरपुर	पहाड़ों की नगरी
उदयपुर	मेवाड़, प्राग्वाट ,मेदपाट, झीलों की नगरी , पूर्व का वेनिस, सैलानियों का स्वर्ग ,माउंटेन और फाउंटेन का शहर ,एशिया का विएना , लेक सिटी, जिंक नगरी ,ऑस्ट्रेलिया जैसी आकृति

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्र और वर्तमान स्थिति

योद्धेय प्रदेश	अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
भटनेर	हनुमानगढ़
शेखावाटी प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, चुरू, नीमकाथाना
कुरुक्षेत्र, शाल्व जनपद, आलोर	अलवर
मेवात क्षेत्र / मत्स्य प्रदेश	खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
श्रीपंथ	बयाना (भरतपुर)
कोठी	धौलपुर
गोपालपाल	करौली
डांग क्षेत्र, बीहड़	करौली, सवाईमाधोपुर
प्राचीन भारत का टाटा नगर, नवाबों का शहर	टोंक
हयहय प्रदेश, हाडौती प्रदेश	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां
बृजनगर, खींचीवाड़ा	झालावाड़
मालव प्रदेश	झालावाड़, प्रतापगढ़
वार्गट	डूंगरपुर बाँसवाड़ा का दक्षिणी भाग
मेवल	बाँसवाड़ा व डूंगरपुर के मध्य का भू-भाग
शिवी जनपद	सिरोही
देवनगरी, चन्द्रावती, आर्बुद	सिरोही
श्रीमाल, बाहड़मेट, मालाणी	बाड़मेर
जलालाबाद, जाबालीपुर	जालोर
मांड प्रदेश, वल्ल, दुंगल	जैसलमेर
जांगल प्रदेश	बीकानेर
थली क्षेत्र	चुरू, हनुमानगढ़, बीकानेर, श्री गंगानगर (चारों की सीमा रेखा जहाँ मिलती है, के आस-पास का क्षेत्र)
रामू जाट की ढाणी	गंगानगर
जाट रियासत	भरतपुर, धौलपुर
मत्स्य संघ / शूरसेन	कोटपूतली-बहरोड़, डीग, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
अर्जुनायन	डीग, अलवर, भरतपुर
बांगड़ प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, नीमकाथाना, डीडवाना-कुचामन, नागौर
सपादलक्ष	बीकानेर
चुन्धेर	अनूपगढ़

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

चम्बल एवं उसकी सहायक नदिया

- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ। क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।
- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिलें के रावतभाटा नामक स्थान पर राणाप्रताप सागर बांध बना हुआ है, जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बांध है इस बांध का 113 वर्ग किलों मीटर में फैला हुआ है।
- चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिलें में बहने के बाद कोटा जिलें में प्रवेश करती है, कोटा जिलें में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बांध बना हुआ है कोटा बैराज बांध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता । कोटा जिलें के नानौरा नामक स्थान पर "काली सिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।
- कोटा तथा बूंदी जिलें की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिलें में प्रवेश करती है बूंदी जिलें की केशोरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा भाग है जो 113 मीटर की गहराई तक है बूंदी जिलें से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाईमाधोपुर की सीमा निर्धारित करती हैं।
- सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहां त्रिवेणी संगम बनाते हैं। सवाई माधोपुर जिलें के पालिया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती है। धौलपुर जिलें के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती है।
- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिलें के मुरादगंज कस्बे में 275 किलों में किलों मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य-

- चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग मे है। यह नदी "गागेयसूस" नामक स्तनपाई जीव के लिए प्रसिद्ध है।
- चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है बहाव क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी चंबल ही है।
- यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे "वाटरसफारी नदी" भी कहा जाता है।
- चंबल नदी से सर्वाधिक अवनालिका अपरदन कोटा जिलें में होता है।
- चंबल नदी राज्य के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली और धौलपुर जिलें में बहती है। यह विश्व की एकमात्र ऐसी नदी है जिस पर प्रत्येक 100 किलोमीटर की दूरी पर 3 बड़े बांध बने हुए हैं और तीनों ही बांध से जल विद्युत उत्पादन होता है।
- संख्या में घड़ियाल पाए जाने के कारण चंबल नदी को घड़ियालों की जन्मस्थली कहा जाता है।

चंबल की सहायक नदियां –

- मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियां-सींवान, रेतम, शिप्रा।
- राजस्थान में मिलने वाली नदियां- आलनिया, परवण, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामणी, कुराल, छोटी काली सिंध आदि

चंबल नदी पर चार बांध बनाए गए हैं-

1. गांधी सागर बांध- मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
2. राणाप्रताप सागर बांध- रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
3. जवाहर सागर बांध- बोरा बास, कोटा
4. कोटा बैराज बांध - कोटा शहर

2. बनास नदी –

बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित खमनौर की पहाड़ियाँ से होता है पूर्णतः प्रवाह के आधार पर यह

अध्याय – 2

8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के **बॉक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालोर)"** थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में गुर्जर जाति के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी। अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को '**जुर्ज**' भी कहा है।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को '**बोरा**' कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं ।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । **कनिघंम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणोंत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी- मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्धशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लों' (गुर्जर) तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।

- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि) का वंशज बताते हैं।
- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दोनों शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला- वर्तमान फलौदी) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँड़ा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ोंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ोंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की। इसने वल्मी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।

- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

कछवाहा राजवंश के प्रमुख शासक –

कोकिल देव –

- 1207 में कोकिल देव ने आमेर के मीणाओं को हरा के आमेर को अपनी राजधानी बनाया था।
- आमेर 1727 तक कछवाहा वंश की राजधानी रही थी।
- कोकिल देव ने अम्बिकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था।
- 1727 में जब सवाई जयसिंह (द्वितीय) ने जयपुर बसाया तो तब कछवाहा वंश की राजधानी जयपुर हुई।
- 520 साल तक कछवाहा वंश की राजधानी आमेर थी।
- कोकिल देव ने बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़) व भेड़ को जीता था।
- पंचमदेव कोकिल देव का पुत्र था जो की पृथ्वीराज चौहान (III) का सामंत था।
- पंचमदेव तराईन के दुसरे युद्ध में मारा गया था।

रामदेव

- रामदेव ने कदमी महल बनाया था।
- कदमी महल में ही कछवाहा वंश का राजतिलक होता था।
- कछवाहों का राजतिलक मीणा जाति करती थी।
- कदमी महल 1237 में आमेर दुर्ग में बनाया गया था।

पृथ्वीराज

- पृथ्वीराज ने 1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायता की थी।
- राणा सांगा और बाबर का खानवा का युद्ध हुआ था जिसमे राणा सांगा की सहायता पुरे राजस्थान के सभी राजपूतो ने की थी।
- पृथ्वीराज ने आमेर को 12 भागों में बाटा था।
- पृथ्वीराज ने अपने राज्य को अपने 12 पुत्रों में विभाजित कर बारह कोटड़ी व्यवस्था प्रारंभ की थी।
- बाला बाई जो की पृथ्वीराज की रानी थी उन्होंने आमेर में लक्ष्मी नारायण मंदिर का निर्माण करवाया था।
- पृथ्वीराज के गुरु चतुर नाथ थे।
- पृथ्वीराज रामानंदी संप्रदाय के संत कृष्णदास पयहारी के अनुयाई थे।
- पृथ्वीराज के पुत्र **सांगा** ने एक कस्बा बसाया था जिसका नाम सांगानेर रखा गया था।
- इसी सांगानेर क्षेत्र को ही मोजमाबाद के नाम से भी जाना जाता था।

भारमल (1547-1574 ई.)

- भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।
- **भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की** व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
- मुग़ल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

अकबर और राजस्थान यात्रा :-

- अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यहीं उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।
- इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

जोधा अकबर विवाह :-

- अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है ।
- जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुग़ल विवाह सम्बन्ध था।
- **भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों** की अधीनता स्वीकार की थी।
- अकबर ने भारमल को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की थी तथा उसके पुत्र भगवन्तदास व पौत्र मानसिंह को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त किया।

भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

- भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।
- उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।
- मानबाई को सुल्तान निस्सा'की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।
- 1562 में जब भारमल अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवन्त दास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।
- भगवन्त दास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।
- अकबर ने भगवन्त दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत 1589 में भगवन्त दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।
- मानबाई को मुग़ल दरबार में'सुल्ताना मस्ताना'के नाम से जाना जाता था। खुसरो इसी का पुत्र था, जहाँगीर के अत्यधिक शराबी होने के कारण मानबाई ने 1608 ई. में आत्महत्या कर ली थी।

मानबाई का शाही मकबरा इलाहाबाद में स्थित है।

मानसिंह (1589-1614 ई.)

- मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।
- मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।
- मानसिंह ने **52 वर्ष** तक मुगलों की सेवा की।
- मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था।

नरहड़ के पीर

- इन्हें शक्कर बाबा पीर के नाम से भी जाना जाता हैं ।
- इनकी दरगाह चिड़ावा (झुन्झुनू) के नरहड़ गांव में हैं ।
- शेख सलीम चिश्ती इन्हीं का शिष्य था । जिनके नाम पर अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रखा था ।
- नरहड का उर्स जन्माष्टमी को भरता हैं ।
- ये बांगड़ के धणी के रूप में भी प्रसिद्ध हैं ।

पीर फकरुद्दीन

- ये दाउदी बोहरा सम्प्रदाय के अराध्य पीर हैं ।
- इनकी दरगाह गलियाकोट डूंगरपुर में स्थित हैं ।

महिला संत

संत भूरी बाई

- ये मेवाड़ की प्रमुख संत महिला हैं ।
- इनका जन्म राजसमंद के सादरगढ़ गाँव में हुआ ।
- ये निर्गुण व सगुण भक्ति को स्वीकार करती थी ।

- **संत नन्हीं बाई**
- ये खेतड़ी रियासत की प्रसिद्ध गायिका थी ।
- इन्होंने स्वामी विवेकानंद को मीरा के पद गाकर सुनाये जिससे स्वामी जी के मन के अंदर समाहित ऊँच-नीच का भाव दूर हो गया ।
- ये दिल्ली घराने के तानरस खान की शिष्या थी ।

संत ताज बेगम

- ताज बेगम मुगल बादशाह ओरंगजेब की भतीजी थी ।
- ये आचार्य विट्ठल नाथ की शिष्या थी, जो वल्लभ सम्प्रदाय से संबंधित थे तथा कृष्ण के भजन-कीर्तन किया करती थी।

संत करमा बाई

- ये नागौर जिले की रहने वाली थी ।
- ये भगवान जगन्नाथ की भक्त कवयित्री थी ।
- ऐसी मान्यता हैं कि भगवान ने इनके हाथ से खीचड़ा खाया था ।

संत फूली बाई

- ये जोधपुर के महाराज जसवंत सिंह की धर्म की बहन थी ।
- जसवंत सिंह इनके उपदेश से बहुत प्रभावित थे ।

अध्याय- 3

वास्तुकला – मंदिर किले और महल

राजस्थान की मस्जिदें, दरगाह एवं मक़बरे
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर)

- मोईनुद्दीन चिश्ती को सूफियों का बादशाह व गरीब नवाज नाम से जाना जाता था।
- इनके गुरु का नाम हजरत शेख उस्मान हारुनी था।
- इनकी वफात (मृत्यु) अजमेर में हुई।
- इनकी दरगाह बनाने की शुरुआत इल्तुतमिश ने की तथा पूर्ण हुमायु ने करवाया।
- यहाँ पर प्रतिवर्ष पहली रज्जब से छठवीं रज्जब तक उर्स का मेला लगता है जिसका उद्घाटन भीलवाडा का गौरी परिवार करता है।
- इस दरगाह में जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ द्वारा करवाया गया।
- अजमेर में चिश्ती की दरगाह पर नजट (भेंट) भेजने वाला प्रथम मराठा सरदार राजा साहू था, तो सुल्तान महमूद खिलजी ने अजमेर शरीफ में बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया था।
- शेख मोईनुद्दीन चिश्ती की मुख्य मजार का निर्माण 1537 ई. में मांडू के सुल्तान ग्यासुद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- इतिहासकार हरविलास शारदा के अनुसार ख्वाजा साहब की पक्की मजार 1464 ई . में बनवायी गयी जब अजमेर मालवा के सुल्तान मोहम्मद खिलजी के अधिकार में था।
- दरगाह में 75 फीट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है।
- यहाँ अकबरी मस्जिद स्थित है।
- यहाँ दो बड़ी देग रखी हैं इनमें बड़ी देग बादशाह अकबर द्वारा (1567 ई.) और छोटी देग बादशाह जहाँगीर (1613 ई.) द्वारा भेंट की गई।
- दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार निजाम द्वार है जिसका निर्माण हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली के द्वारा करवाया गया था।
- इसके ऊपर जो दो नगाड़े रखे हुए हैं उन्हें मुगल सम्राट अकबर ने भेंट किए थे।

- महफिल खाना का निर्माण बशीरूद्दौला द्वारा 1888 ई. में करवाया गया था। यहाँ उर्स के मौके पर कव्वाली गाई जाती है।
- अजमेर यहाँ बेगमी दालान है जिसका निर्माण बादशाह शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा द्वारा करवाया गया ।
- मुख्य मजार के चारों ओर चाँदी का कटहरा सवाई जयसिंह ने बनवाया।
- यहाँ पर अनेक लोगों की कब्रगाह है जिनमें ख्वाजा साहब की पुत्री बीबी हाफिज जमाल, ख्वाजा मुइनुद्दीन के दो पोते, माण्डू के सुल्तान तथा भिश्ती निजामुद्दीन सिक्का की कब्रे मौजूद हैं।

हजरत शकर पीर बाबा की दरगाह (नरहड़, झुंझुनूं)

- यह राजस्थान की सबसे बड़ी दरगाह है।
- इन्हें बांगड़ के धणी, नरहड़ के पीर कहते हैं।
- प्रतिवर्ष जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को उर्स भरता है।
- मानसिक विकलांग लोगों के मिट्टी रगड़ने से आराम मिलता है।
- यह दरगाह सांप्रदायिक सौहार्द्र का अनूठा उदाहरण है।
- फतेहपुर सीकरी के सलीम चिश्ती शक्कर पीर बाबा के ही शिष्य थे।
- इस में तीन प्रवेश द्वार हैं- (1) बुलंद दरवाजा (2) बसेती दरवाजा (3) बगली दरवाजा

शेख हमीमुद्दीन नागौरी की दरगाह (नागौर)

- यह राजस्थान का दूसरा ख्वाजा या तारकीन सुल्तानों का फकीर या संन्यासियों का सुल्तान या हम्मीमुद्दीन नागौरी आदि नामों से विख्यात है।
- यहाँ राजस्थान का दूसरा सबसे बडा मुस्लिम मेला था तारकीन साहब का उर्स लगता है।
- ये गौरी व मोईनुद्दीन चिश्ती के साथ भारत आये थे।
- इन्हें सुल्तान- ए - तारकीन कहा जाता है।
- सुल्तान- ए- तारकीन साहब की दरगाह नागौर में गिनाणी तालाब के पास स्थित है।
- ये ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
- 1274 ई . में नागौर में इंतकाल हो गया।
- यहाँ अजमेर के बाद दूसरा सबसे बड़ा उर्स भरता है।

सैय्यद फखरुद्दीन की दहगाह (गलियाकोट, डूंगरपुर)

- इसे मजार-ए-फखरी भी कहा जाता है।
- यह दरगाह माही नदी के किनारे स्थित है।
- यह दाऊदी बोहरा संप्रदाय का प्रमुख तीर्थ स्थल है।

मीरान साहब की दरगाह (अजमेर)

- यह दरगाह अजमेर दुर्ग में हैं।
- मीरान साहब का मूल नाम मीर सैय्यद हुसैन खिंगसवार था। अजमेर दुर्ग में ही मीरान साहब के घोड़े की मजार है जिस पर दाल चढ़ाकर लोग मन्नते मांगते है।

NOTE- मीरा साहब की दरगाह बूँदी में स्थित है।

काकाजी की दरगाह (प्रतापगढ़)

- इसे कांठल का ताजमहल कहते हैं।

- ***मलिक शाह की दरगाह (जालौर)***
- *यह दरगाह जालौर दुर्ग में है जो सांप्रदायिकता के लिये जानी जाती है।*
- *इस दरगाह पर नाथ साधु भी चादर चढ़ाते हैं ।*
- ***मीठेशाह की दरगाह –गागरौण***
- ***सफदरजंग की दरगाह- अलवर***
- ***अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह –तिजारा (खैरथल-तिजारा)***
- ***तन्हा पीर की दरगाह –मण्डोर***
- ***कबीर शाह की दरगाह –करौली***
- ***कमरुद्दीन शाह की दरगाह –झुंझुनू***
- ***पीर अब्दुल्ला की दरगाह- बांसवाडा***
- ***दीवान शाह की दरगाह- कपासन (चित्तौड़गढ़)***

किले एवं महल

- *राजा- महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।*
- *दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ, तालाब, कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।*
- *भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-*
  1. *दुर्गीकृत*
  2. *अदुर्गीकृत दुर्ग*
- *भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।*
- *राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।*
- *दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।*
- *कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।*

शुक्र नीति के अनुसार 9 प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-

शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

1. ***एरन दुर्ग*** *-यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से-निर्मित होता है।* ***उदाहरण***- *रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग*
2. ***धान्वन (मरूस्थल) दुर्ग*** *- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।* ***उदाहरण***- *जैसलमेर, बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।*
3. ***औदक दुर्ग (जलदुर्ग)*** *- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है। उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।*
4. ***गिरि दुर्ग***- *ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है। उदाहरण- कुम्भलगढ़, तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)*
5. ***सैन्य दुर्ग***- *जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो। ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।*
6. ***सहाय दुर्ग*** *- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।*
7. ***वन दुर्ग***- *जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।* ***उदाहरण***- *सिवाना दुर्ग, त्रिभुवनगढ़ दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग।*
8. ***पारिख दुर्ग***
   - *वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।*
   - *उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग, भरतपुर।*
9. ***पारिध दुर्ग***
   - *जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी- बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।*
   - *उदाहरण-चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़ दुर्ग।*

- *राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए-भटनेर (हनुमानगढ़)*
- *राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)*
- *राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग*
- *राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल 99 बुर्ज)*
- *राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग-बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (ब्यावर)*
- *राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)*
- *राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग-मोहनगढ़ (जैसलमेर)*
- *वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये- 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर*

चितौड़गढ़ का किला

- ***उपनाम***- *चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी- पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,*
- *चित्तौड़गढ़ दुर्ग को चित्रकूट दुर्ग, खिज्राबाद, सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट, वॉटर फोर्ट आदि नामों से जाना जाता है।*
- *यह राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट'गिरी दुर्ग है।*

- **गींदड़**

- शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है।
- गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है।
- नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा दुल्हन, डाकिया-डाकिन, के स्वांग प्रमुख हैं।
- गींदड नृत्य में ढोल, डफ व चंग बाय "यंत्र' प्रयुक्त होते हैं।
- पुरुष दोनों हाथों में दो छोटे डंडे लेकर उन्हें आपस में परस्पर टकरा कर यह नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

- **ढप नृत्य**
- बसंत पंचमी पर शेखावटी क्षेत्र में ढप व मंजीरे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य ढप नृत्य कहलाता है।

- **लहुर नृत्य** - लहूर नृत्य मुख्यतः शेखावटी क्षेत्रों में मस्ती के माहौल में उमंगों के साथ प्रसिद्ध अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा अभिनय नृत्य किया जाता है।
- लहूर शब्द को राजधानी भाषा में मीठी खुजली कहा जाता है। इस नृत्य में मूल कथानक नहीं होता है।

- **जिंदाद नृत्य**
- यह नृत्य शेखावाटी क्षेत्र में स्त्री- पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में मुख्य वाद्य यंत्र ढोलकी होता है ।

- **अग्नि नृत्य**

- बीकानेर के जसनाथी सिद्धों द्वारा 'फतै-फतै' के उद्घोष के साथ तपते अंगारों पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों (भक्तों) को रोमांचित कर देता है।
- यह नृत्य फाल्गुन-चैत्र के महीनों में किया जाता है।
- इस अवसर पर नगाड़ा वाद्य यंत्र बजता है और नृतक मतीरा फोड़ना, हल जोतना आदि क्रियाएँ करते हैं।
- अग्नि नृत्य में नृत्यकार अंगारों से मतीरा फोडना, हल जोतना आदि क्रियाए सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करता है। अग्नि के संग राग व फाग का अनूठा दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

- **बम नृत्य**

- इसमें बम वाद्य व रसिया गीत गाया जाता है इस कारण इसे बम रसिया नृत्य भी कहते हैं।
- भरतपुर-अलवर क्षेत्र में होली के अवसर पर नई फसल आने की खुशी में किया जाने वाला नृत्य जिसमें बड़े नगाड़े (बम) की ताल पर पुरुष तीन वर्गों में बँटकर नाचते हैं।
- इस नृत्य को गुर्जर जाति के अविवाहित लड़के करते हैं ।
- बम रसिया में ढोल, मंजीरा, थाली, चिमटा वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।

- **चरकूला नृत्य**
- चरकूला नृत्य पूर्वी क्षेत्र विशेष रूप से भरतपुर जिले में किया जाता है । यह ब्रज क्षेत्र में भी प्रसिद्ध है ।
- चरकूला नृत्य विशेष रूप से उत्तर प्रदेश का नृत्य है ।
- चरकूला नृत्य धातु के बर्तन पर दीपक जलाकर उसको सिर पर रखके महिलाएं नृत्य करती हैं ।

- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री- **हीरालाल शास्त्री**
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के प्रथम उपमुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत व निर्वाचित हुए- **जयनारायण व्यास**
- राजस्थान में सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान में न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के सबसे युवा मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हुई- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम मुस्लिम (अल्पसंख्यक) मुख्यमंत्री- **बरकतुल्ला खां**
- राजस्थान के प्रथम दलित मुख्यमंत्री (अनुसूचित जाति के)- **जगन्नाथ पहाडिया**
- राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री जो उपराष्ट्रपति भी बने – **भैरोंसिंह शेखावत**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो विधानसभा अध्यक्ष भी रहे- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो राज्य वित्त आयोग (दूसरा) के अध्यक्ष भी बने- **हीरालाल देवपुरा**

- **एक से अधिक बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने वाले व्यक्ति-**
- श्री मोहनलाल सुखाड़िया (4 बार)
- श्री भैरोंसिंह शेखावत (3 बार)
- श्री हरिदेव जोशी (3 बार)
- श्री अशोक गहलोत (3 बार)
- श्रीमती वसुंधरा राजे (2 बार)
- श्री शिवचरण माथुर (2 बार)
- श्री जयनारायण व्यास (1 बार मनोनीति, 1 बार निर्वाचित)
- **राजस्थान के ऐसे मुख्यमंत्री जो राज्यपाल भी रहे :-**
- मोहनलाल सुखाड़िया- कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु के राज्यपाल रहे ।
- हरिदेव जोशी- असम, मेघालय, पं. बंगाल के राज्यपाल रहे।
- शिवचरण माथुर- असम के राज्यपाल रहे ।
- जगन्नाथ पहाड़िया- बिहार, हरियाणा के राज्यपाल रहे ।

- **राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :-**
- भैरोंसिंह शेखावत (तीन बार)
- हरिदेव जोशी (एक बार)
- वसुंधरा राजे (एक बार)

- **राज्य मंत्रिपरिषद्**
- **अनुच्छेद 163** के अनुसार राज्यपाल को सलाह एवं सहायता देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होगी जिसका प्रमुख मुख्यमंत्री होता है । राज्यपाल अपने स्वविवेक शक्तियों के अलावा सभी कृत्यों का प्रयोग मंत्रिपरिषद् की सलाह पर करता है ।
- **NOTE- राज्यपाल को मंत्रिपरिषद् का परामर्श मानना अनिवार्य है । परामर्श को एक बार भी पुनः विचार हेतु नहीं भेज सकता ।**
- **NOTE – मंत्रिपरिषद् ने राज्यपाल को क्या सलाह दी इसकी न्यायालय में जाँच नहीं की जा सकती।**
- **अनुच्छेद 164** मंत्रियों से संबंधित प्रावधान
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है तथा अन्य मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल ही करता है ।
- **91 वें संविधान संशोधन (2003)** के तहत राज्यों में मुख्यमंत्री सहित मंत्रियों की अधिकतम संख्या विधानसभा की कुल संख्या के 15 % से अधिक नहीं होगी लेकिन न्यूनतम संख्या मुख्यमंत्री समेत 12 से कम नहीं होनी चाहिए।
- अनुच्छेद 164 के अनुसार मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं ओडिशा राज्यों में एक जनजातिय मंत्री की नियुक्ति करना अनिवार्य है । यह जनजातिय मंत्री अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्गों के कल्याण से संबंधित कार्य करता है । मूल संविधान यहाँ बिहार राज्य का भी उल्लेख था । लेकिन 94 वें संविधान संशोधन द्वारा 2008 में इस अनुच्छेद से बिहार शब्द को हटाकर छत्तीसगढ़ व झारखण्ड शब्द जोड़े गए।
- **अनुच्छेद 164 (3)** राज्यपाल कार्यभार ग्रहण करने से पहले मंत्रियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाते है । (अनुसूची-3 के प्रारुप के अनुसार)
- **अनुच्छेद 164 (2) स्पष्ट करता है** कि मंत्रिपरिषद् का सामूहिक उत्तरदायित्व विधानसभा के प्रति होगा।
- **अनुच्छेद 164 (4)** मंत्रियों की योग्यता
- (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो । (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।
- **NOTE**-कोई व्यक्ति यदि विधानमंडल का सदस्य नहीं भी है तो उसे मंत्री नियुक्त किया जा सकता है लेकिन 6 महीने के अंदर उसका सदस्य बनना अनिवार्य है अन्यथा उसका मंत्री पद समाप्त हो जाएगा । मंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है ।
- **अनुच्छेद 164 (5)** मंत्रियों के वेतन एवं भत्ते राज्य विधानमंडल द्वारा निर्धारित किए जाते हैं ।
- **अनुच्छेद 166** के तहत् राज्य के समस्त कार्य राज्यपाल के नाम से किए जाते हैं ।
- **अनुच्छेद 177** में यह उल्लिखित है कि मंत्री चाहे किसी भी सदन का सदस्य हो वह दोनों सदनों की बैठकों में भाग ले सकता है । लेकिन मत उसी सदन में देगा जिस सदन का वह सदस्य है ।

- ***मंत्रिपरिषद् का गठन***
- *मंत्रिपरिषद् में तीन प्रकार के मंत्री होते हैं- कैबिनेट मंत्री, राज्य मंत्री व उपमंत्री ।*
- ***1. कैबिनेट मंत्री*** *:- यह मंत्रिपरिषद् का छोटा- सा भाग होता है । यह सभी अपने- अपने विभागों के मुखिया होते हैं । इनके पास राज्य के महत्त्वपूर्ण विभाग गृह, वित्त कृषि, उद्योग आदि होते हैं ।*
- ***राज्यमंत्री*** *:- राज्य मंत्रियों को या तो स्वतंत्र प्रभार दिया जाता है या उन्हें कैबिनेट मंत्रियों के साथ संबद्ध किया जा सकता है ।*
- ***उपमंत्री*** *:- इन्हें स्वतंत्र प्रभार नहीं दिया जाता है ।*
- ***NOTE*** *:- मंत्रियों की एक और श्रेणी भी है, जिन्हें संसदीय सचिव कहा जाता है । वे वरिष्ठ मंत्रियों के साथ उनके संसदीय कार्यों में सहायता के लिए नियुक्त होते हैं । इनकी नियुक्ति मुख्यमंत्री द्वारा की जाती है । इनकी संख्या निश्चित नहीं होती है, इन्हें राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त होता है । यह मंत्रिपरिषद् के सदस्य नहीं होते हैं । मुख्यमंत्री इन्हें शपथ दिलाते हैं । यह मुख्यमंत्री के प्रति उत्तरदायी होते हैं । मुख्यमंत्री इन्हें कभी भी बर्खास्त कर सकते हैं ।*
- ***NOTE*** *:- राजस्थान में संसदीय सचिव का पद लाभ के पद के दायरे में नहीं आता है । राजस्थान में पहली बार वर्ष 1967 में मोहनलाल सुखाड़िया के समय संसदीय सचिवों को नियुक्त किया गया ।*
- *" मंत्रालय " शब्द केन्द्र के लिए प्रयोग होता न कि राज्यों के लिए अर्थात् राज्य सरकार विभागों में बटा होता है ।*

मंत्रिपरिषद्	***मंत्रिमण्डल***
मंत्रिपरिषद् का आकार बड़ा होता	*मंत्रीमण्डल मंत्रिमण्डल का आकार छोटा होता है ।*
मंत्रिपरिषद् में कैबिनेट, राज्यमंत्री व उपमंत्री स्तर के मंत्री होते हैं ।	*मंत्रिमण्डल में केवल कैबिनेट स्तर के मंत्री ही होते हैं ।*
मंत्रिपरिषद् मंत्रिमण्डल के निर्णयों को लागू करती है।	*यह मंत्रिपरिषद् द्वारा अपने निर्णयों के अनुपालन की देखरेख करती है ।*
यह सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी है ।	*यह मंत्रिपरिषद् की विधानसभा के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी को लागू करती है ।*

मंत्रियों के उत्तरदायित्व

मंत्रियों के उत्तरदायित्व	
सामूहिक उत्तरदायित्व	***अनुच्छेद (2) 164स्पष्ट करता है*** *कि मंत्रिपरिषद् का सामूहिक उत्तरदायित्व विधानसभा के प्रति होगा । यदि विधानसभा द्वारा मंत्रिपरिषद् के ख़िलाफ़ अविश्वास प्रस्ताव पारित किया जाता है तो पूरी मंत्रिपरिषद् को त्यागपत्र देना पड़ता है ।*
व्यक्तिगत उत्तरदायित्व	*मंत्री राज्यपाल के प्रसादपर्यंत कार्य करते हैं एवं राज्यपाल द्वारा मुख्यमंत्री की सलाह पर इनकी नियुक्ति होती है । मुख्यमंत्री से मतभेद की स्थिति में मुख्यमंत्री की सलाह पर संबंधित मंत्री को राज्यपाल बर्खास्त कर सकता है ।* ***अनुच्छेद (1) 164के तहत*** *राज्य स्तर पर मंत्रियों का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व राज्यपाल के प्रति है ।*
विधिक उत्तरदायित्व	*कोई विधिक उत्तरदायित्व नहीं हैं ।*

- ***मंत्रिपरिषद् के प्रमुख कार्य-***
- *मंत्रिपरिषद् राज्य के प्रशासन के संचालन के लिये विभिन्न नीतियों का निर्माण करती है ।*
- *मंत्रिपरिषद् राज्य की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के लिये विकासकारी योजनाएँ बनाती है ।*
- *मंत्रिपरिषद् विधि निर्माण के क्षेत्र में विधानमंडल का नेतृत्व करती है ।*
- *बजट तैयार करना व स्वीकृत करना*
- *राज्यपाल का अभिभाषण तैयार करना*
- *कार्मिक प्रशासन पर नियंत्रण*
- *राजकीय कार्यपालिका का नियंत्रण राज्य के प्रशासन का संचालन (उच्च पदों पर नियुक्ति के लिए राज्यपाल को परामर्श देना)*

राजस्थान मंत्रिमंडल

श्री भजन लाल शर्मा, मुख्यमंत्री	• *कार्मिक विभाग* • *आबकारी विभाग* • *गृह विभाग* • *आयोजना विभाग* • *सामान्य प्रशासन विभाग* • *नीति निर्धारण प्रकोष्ठ मुख्यमंत्री सचिवालय* • *सूचना एवं जनसंपर्क विभाग* • *भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो)एसीबी(*
सुश्री दिया कुमारी, उप मुख्यमंत्री	• *वित्त विभाग* • *पर्यटन विभाग* • *कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व विभाग* • *सार्वजनिक निर्माण विभाग* • *महिला एवं बाल विकास विभाग* • *बाल अधिकारिता विभाग*
डॉ प्रेमचन्द बैरवा, उप मुख्यमंत्री	• *तकनीकी शिक्षा विभाग* • *उच्च शिक्षा विभाग*

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
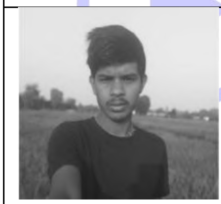	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
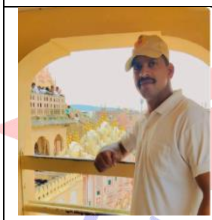	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – **https://wa.link/tiy32p**

Online order करें – **https://shorturl.at/coEI9**

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO